

लक्ष्मी के चण्डिकाकृत के काव्य नाद मानव म को 1 नके आदि
 वर्णरत्नाकरके अतीतके रसात् काव्यक चरितार्थ से अरुण-पुस्तक
 अदि कि लक्ष्मी से नगवर्णना सजमे छोर-पेछ जापतक
 नामक अलंकार कर्तव्य होय आश्रित नगरक बाणार में औरलिनार
 विजयन वानक भाग नामोहल्लव कर्तव्य होय। पुस्तक से नगवर्णना
 प्रथमाह से अथवाह रूप से सुख सुख से सुख को नो वाक
 वर्णन में चण्डिकाकृत अभाव नाद अदि। नव औरवराचार्य ज्योति
 रीत्यरु वर्णरत्नाकर तक समुह साहित्य विम। है के लक्ष्मी से र
 पुस्तक रसात् में रचनाकारक सजग दुवि अदि साम्यक आहार लक्ष्मी
 नामक जात अदि के साहित्यक प्रसन्नताक रंग प्रानुत कल्पे हो
 तंहा कारण अदि जे किछु औरे सुखका काव्योपयोगी अन्व
 कहे सिंगर नक जाकेल

The end